मात्र देह नहीं है औरत

छिन्नमस्ता और नर नारी उपन्यास के विशेष सन्दर्भ में

निक्की कुमारी

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
मो. 8802443709

स्वतंत्रता को समस्त भारतीय साहित्य की ऐसी विभाजक रेखा माना जा सकता है जहाँ से नवलेखन का प्रारम्भ होता है। आधुनिक भारत के इतिहास में 19 वीं सदी में अनेक सुधारवादी आन्दोलन घटित हुए, जैसे सती प्रथा व बालविवाह पर रोक, विधवा विवाह व स्त्री शिक्षा पर बल आदि। इस सामाजिक-सांस्कृतिक जागरण ने समाज में हलचल पैदा की, इस हलचल से साहित्यलेखन भी कमोबेश प्रभावित हुआ। आज स्त्रियों की स्थिति में काफी बदलाव आया है। प्रगति के हर सोपान पर स्त्रियाँ नजर आने लगी हैं। जमीन से लेकर आसमान तक स्त्रियों ने अपनी पहुँच बना ली है। घर की जिम्मेदारियाँ निभाते हुए समाज और देश की जिम्मेदारियाँ भी बखूबी निभा रही हैं। परन्तु इन तमाम सच्चाइयों के बावजूद आज भी स्त्री की देह पर स्वाधिकार का प्रश्न विभिन्न मंचों पर छाया हुआ है।

अस्मितावादी विमर्शों में देह विमर्श बीसवीं सदी के सबसे चर्चित विषयों में से एक है और समकालीन लेखक-लेखिकाओं ने इसे अपने-अपने ढंग से परिभाषित किया है। स्त्री देह के सन्दर्भ में मैत्रेयी पुष्पा लिखती हैं-स्त्री देह तो इस दुनिया की सबसे बड़ी समस्या है। ऐसा लगता है कि यह न हो तो कोई दिक्कत ही न हो। सारे फरमान उसकी देह को लेकर जारी किए जाते हैं। सारे नियम उसकी देह के लिए बनते हैं। सारी नैतिकताएँ, संस्कृतियाँ, सभ्यताएँ वह अपनी देह के भीतर पाल रही है। बड़े आश्चर्य की बात यह है कि जिस स्त्री की देह को लेकर इतनी साजिशें चल रही हैं, उसी देह में रहने वाले दिमाग को एकदम नकार दिया गया। उसे पनपने ही नहीं दिया गया।

न केवल भारतीय समाज बल्कि दुनिया के हर समाज में सदियों से स्त्रियाँ अपनी देह पर अपना अधिकार पाने के लिए संघर्षरत है। परम्परागत मानसिकता स्त्री को देह में केन्द्रित करने की रही है। घृणा हो या कामना केंद्र में स्त्री देह ही रही है चाहे वो जीवन हो या फिर साहित्य। पुरुष सत्ता स्त्री के व्यक्तित्व को देह केन्द्रित मानकर मनचाहा सलूक करती रही है किन्तु जब यही बात स्त्री ने अपने अधिकार सुरक्षित रखते हुए कहना चाही, जनसंख्या नियंत्रण के उपकरणों को अपनी कामना पूर्ति के लिए उपयोग में लाना प्रारम्भ किया, स्त्रियों की इस जागृति से पितृसत्तात्मक व्यवस्था को धक्का लगा। क्या स्त्री का स्वयं की देह पर अपना अधिकार है? आज ये प्रश्न प्रत्येक स्त्री के मन-मस्तिष्क में छाया हुआ है। स्त्री चिन्तन की चुनौतियाँ की लेखिका रेखा कस्तवार लिखती है-स्त्री देह का प्रश्न, स्त्री-प्रश्नों में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। देह के प्रति विचारवान होना, स्त्री का देह पर अपना अधिकार जहाँ स्त्रीत्ववाद (विशेषत: रेडिकल फेमिनिज्म) का आधार प्रश्न रहा है वहीं साहित्य में यह भी कहा जाता है कि दुनिया की शायद ही कोई ईमानदार नारी कथा हो जो अंतत: सेक्स कथा न हो। स्त्री मन, मस्तिष्क और मेधा के स्थान पर देह से परिभाषित और पहचानी जाती रही है।

> स्त्री की यौन इच्छा को सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक कारक प्रभावित करते हैं। सत्ता के केंद्र में बैठा पुरुष स्त्री की कामुकता को अपने नियंत्रण में रखना चाहता है ताकि वह सत्ता पर अपना अधिकार बनाये रख सके। हमारे भारतीय समाज में यदि कोई स्त्री अपनी यौन संतुष्टि को पूरा करने के लिए साथी की तलाश करती है तो उसे चरित्रहीन और भौंडा समझा जाता है।

स्त्री की यौन इच्छा को सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक कारक प्रभावित करते हैं। सत्ता के केंद्र में बैठा पुरुष स्त्री की कामुकता को अपने नियंत्रण में रखना चाहता है ताकि वह सत्ता पर अपना अधिकार बनाये रख सके। हमारे भारतीय समाज में यदि कोई स्त्री अपनी यौन संतुष्टि को पूरा करने के लिए साथी की तलाश करती है तो उसे चरित्रहीन और भौंडा समझा जाता है। विश्व के लगभग सभी देशों में स्त्री की कामुकता का दमन किया जाता रहा है और यहाँ तक तर्क दिया जाता है कि स्त्री में कामेच्छा होती ही नहीं है। स्त्री की कामुकता को स्वीकार करना पितृसत्तात्मक समाज के ठेकेदारों को कभी स्वीकार्य नहीं रहा। स्त्री की कामुकता को पुरुषों ने अपने आनन्द का एक माध्यम बना लिया। पुरुष ने कभी उसकी देह को अपनी यौन संतुष्टि के लिए नोंचा तो कभी स्त्री की प्रजनन क्षमता का दोहन अपने वंश को आगे बढ़ाने के लिए किया। यदि कभी किसी स्त्री ने समाज की इन चिरपरिचित मान्यताओं को ठुकराकर अपनी कामुकता पर अपना अधिकार जताना चाहा तो समाज ने उसे चरित्रहीनता का तमगा पहनाकर वेश्या की श्रेणी में रख दिया।

स्त्री देह के मुद्दे को लेकर काफी साहित्य सृजन हुआ है और इसी कड़ी में छिन्नमस्ता और नर नारी उपन्यास में स्त्री के स्वयं की देह पर अधिकार का प्रश्न मुख्य रूप से उभरा है। छिन्नमस्ता उपन्यास लेखिका प्रभा खेतान द्वारा व नर नारी उपन्यास लेखक कृष्ण बलदेव वैद द्वारा लिखा गया